परम पूज्य गुरुदेव की अफ्रीका यात्रा

(अद्भुत पुस्तक)

चेतना की शिखर यात्रा एवं अनेकों sources

परम पूज्य गुरुदेव की अफ्रीका यात्रा का उद्देश्य

गुरुदेव की अफ्रीका यात्रा के बारे में लिखना दो महान व्यक्तियों के बिना अपूर्ण ही है। उनमें से प्रथम नाम आता है नैरोबी निवासी आदरणीय विद्या परिहार जी का और दूसरा नाम है मसूरी इंटरनेशनल स्कूल के जन्मदाता एवं प्रवासी भारतीय आदरणीय हंसमुख रावल जी। हम तो धन्यवाद् करते हैं फेसबुक के Mark Zuckerberg जी का जो Harvard University dropout हैं और Elon Musk जी का जो twitter के मालिक हैं। इन सोशल मीडिया साइट्स ने हमें विद्या परिहार और रावल जी के बारे में जानकारी दी और उसी के बाद हम आगे बढ़ पाए। मसूरी इंटरनेशनल स्कूल के जन्म की रावल जी की वीडियो हमारे दर्शक

देख चुके हैं फिर भी हम उसका लिंक revision के लिए यहाँ दे रहे हैं। link

जब रावल जी का नाम आया है तो क्यों न उनकी पत्नी कल्पना रावल जी के बारे में कुछ जान लें। भुज गुजरात में जन्मी कल्पना जी Deputy Chief Justice and Vice President of the Supreme Court of Kenya के पद से रिटायर हुई हैं। यह विवरण हम इसलिए दे रहे हैं कि लेख में आगे चल कर पाठक देखेंगें कि second class समझे जाने वासियों ने परिश्रम के बल पर अफ़्रीकी समाज में श्रेष्ठ स्थान बनाये।

विद्या परिहार जी नैरोबी में एक इंग्लिश स्कूल चलाती थीं, आज कल शायद रिटायर्ड है और परम पूज्य गुरुदेव के कार्य में पूरी तरह समर्पित हैं। उनके बारे

में जानने के लिए हमारे साथियों को हमारा 22 अप्रैल 2020 का व्हाट्सप्प मैसेज की summary अवश्य ही पढ़ना चाहिए।

आज प्रातः whatsapp पर एक मैसेज प्राप्त हुआ । नाम तो नहीं मालूम था ,केवल फ़ोन नंबर था । जब profile पिक्चर देखी तो स्मरण हो गया की यह कोई जानकार हैं। 2 माह पूर्व हमने अपने चैनल पर एक वीडियो अपलोड की थी जिसका शीर्षक था "Gurudev's first visit abroad in 1972-incredible parrot" इस वीडियो का लिंक इधर दे रहे हैं। link

यह मैसेज विद्या परिहार जी का था जो नैरोबी में रहती हैं । नैरोबी केन्या की राजधानी है । एक दम

गूगल से चेक किया तो उधर दोपहर का 1 बजा था ।
उनको मैसेज भेजा कि क्या बात कर सकते हैं ? उनकी
हाँ के बाद बात की तो मन बहुत ही प्रसन्न हुआ।उन्होंने
बताया कि उनके किसी मित्र ने यह वीडियो यूट्यूब पर
देखी और उनको शेयर की।अपना आभार व्यक्त करना
चाहतीं थी लेकिन हमारा फ़ोन नंबर तो उनके पास था
नहीं। उन्होंने Abroad Cell शांतिकुंज में वरिष्ठ
कार्यकर्ता राज कुमार वैष्णव जी से हमारा फ़ोन
लिया। ऐसे हुआ हमारा संपर्क। इस वीडियो में गुरुदेव
की 1972 वाली ईस्ट अफ्रीका यात्रा का विवरण
दिया था । एक दम याद ताज़ा हो गयी । भारत से
बाहिर विश्व के प्रथम शक्ति पीठ (जो केन्या में ही

है) की भी बातें हुईं और हमारे ऑनलाइन ज्ञान रथ के माध्यम से जो पुरषार्थ सम्पन्न हो रहा है उसको काफी सराहना मिली । इस सराहना के हकदार हम अकेले नहीं हो सकते क्योंकि इसमें आप सबका पुरषार्थ समिल्लित है। इस पोस्ट का उद्देश्य ही यह है कि आप पूज्यवर के ज्ञान की मशाल विश्व भर में जागृत कर रहे हैं -बहुत बहुत धन्यवाद । और विद्या जी आपका धन्यवाद् तो है ही जिन्होंने इतना प्रयास किया । राजकुमार जी का भी आभार । वह हमेशा ही हमारा सहयोग करते हैं । श्रेध्य डॉक्टर साहिब आदरणीय प्रणव पंड्या जी के ऑफिस(Chancellor office, पर्ण कुटीर) की वीडियो उन्ही के पुरषार्थ से सम्पन्न हो पायी थी । विद्या जी ने उस तोते की पिक्चर ऑनलाइन ढूंढने

का प्रयास किया जिसने गुरुदेव के Kenya प्रवास के दौरान बहुत अहम भूमिका निभाई थी । इस के लिए आपको वीडियो देखनी चाहिए ।

विद्या जी और रावल जी के इस संक्षिप्त परिचय को यहीं छोड़कर आगे बढ़ते हैं।

हिमालय यात्रा से वापिस आने पर गुरुदेव शांतिकुंज में गोष्ठी ले रहे थे ,डॉक्टर साहिब भी उपस्थित थे। विदेश यात्रा के सन्दर्भ में चर्चा हुई तो गुरुदेव ने कहा कि वे परिजन तो हम लोगों के साथ जन्म जन्मांतरों से जुड़े हुए हैं,ज़माने को बदल देने की इस युग साधना में वे भी योगदान करते हुए दीखें इसलिए यह व्यवस्था की है। भगवान चाहें तो चुटकी बजाते दुनिया को उलट पुलट कर दें, पर वे अपने पुत्रों को सक्रिय देखना चाहते

हैं। गोष्ठी में उपस्थित कार्यकर्ताओं के लिए यह स्पष्ट हो गया कि परिजनों से सीखना,सूचनाएँ आमंत्रित करना तो एक नैमित्तिक (casual) सी प्रक्रिया है। गुरुदेव वास्तव में विभूतिवान व्यक्तियों को कुछ देने के उद्देश्य से ही विदेश जा रहे हैं। गुरुदेव ने यात्रा के सन्दर्भ में आगे कहा कि हमारी इस यात्रा का विवरण एवं सूचना अखबारों, रेडियो और अन्य प्रचार माध्यमों में नहीं लाना है। यह यात्रा प्रचार के लिए हरगिज़ नहीं है, इसका उद्देश्य संसार की विभूतिवान आत्माओं से प्रत्यक्ष संपर्क करना है,परामर्श करना है कि वे अपने-अपने ढंग से, अपने-अपने क्षेत्र में,अपनी सामर्थ्य के अनुसार तत्परतापूर्वक कैसे जुट सकते हैं।

इसी सम्पर्क प्रक्रिया का विस्तृत रूप आजकल हम आये दिन देख रहे हैं। शांतिकुंज से आदरणीय डॉक्टर चिन्मय पंड्या जैसी प्रतिभाएं विश्व के कोने-कोने में गुरुदेव से शक्ति एवं प्रेरणा प्राप्त कर उनके विचारों का प्रचार कर रही हैं।

इतना कहकर गुरुदेव कुछ रुके। वहां बैठे किसी कार्यकर्ता के मन में प्रश्न आया कि गुरुदेव जब जा ही रहे हैं और महत्वपूर्ण लोगों से मिलेंगे भी सही तो इस बारे में किसी को बताया क्यों न जाए? गुरुदेव ने उस कार्यकर्ता की ओर देखा और फिर माताजी की ओर देखा, जैसे कह रहे हों कि इस बारे में वही कुछ कहें। माताजी ने कहा,

“अगले दिनों गुरुदेव की यात्रा से कई महत्वपूर्ण संभावनाएं सामने आएंगी। हम लोग सोचते हैं कि उनका श्रेय अनेक व्यक्तियों को मिले। गुरुदेव इसलिए उन्हें ही आगे रखेंगे। इन दिनों अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भी धर्माध्यक्षों की भूमिका संदिग्ध और लांछित होने लगी है। वे राजनीति को प्रभावित करने और निहित स्वार्थों को पूरा करने में जुटे रहते हैं।”

उस गोष्ठी में गुरुदेव ने यात्रा के संबंध में सावधानी बरतने का एक उद्देश्य यह भी बताया था कि विदेश यात्रा के समाचार आने, प्रचार होने से सामूहिक स्तर पर कोई लाभ होगा या नहीं, एक वितंडावाद (निरर्थक दलीलों की चर्चा) जरूर खड़ा हो सकता है ।इसलिए भी

गुरुदेव चाहते थे कि यात्रा के प्रचार और सूचना को विश्व से न जोड़ा जाए।

इस यात्रा में गुरुदेव ने कितने और कैसे-कैसे व्यक्तित्वों से संपर्क स्थापित किये,उन्हें तराशा, ज्यों-ज्यों हम आगे बढ़ेंगें सब जानते जायेंगें।

अफ्रीका जाने का उद्देश्य-अफ्रीका और भारत की लुप्त कड़ियां

गुरुदेव की अफ्रीका यात्रा का प्रकट उद्देश्य वहां रहने वाले प्रवासी भारतीयों की इच्छा पूरी करना था। वर्षों से वहां के प्रवासीजन गुरुदेव को अपने घर,बस्ती और क्षेत्र में आमंत्रित कर रहे थे । केन्या, तंजानिया, मोजांबिक आदि देशों में हिन्दु, इस्लाम, ईसाई आदि

सभी धर्म संप्रदायों के लोग रहते थे लेकिन भारत से गए प्रवासियों की संख्या सबसे अधिक थी। सातवीं, आठवीं शताब्दी में ब्रिटिश और अरब देशों ने अफ्रीकी देशों में colonies बनायीं।   वहां इन देशों के धर्म प्रचारकों ने लोगों को अपने विश्वासों और परंपराओं में दीक्षित किया और स्थानीय संस्कृति की जड़ें भी खोदी। यह तो सर्वविदित है कि शासक देश वहां के मूल निवासियों एवं उनके रिवाजों,मान्यताओं की समाप्ति के यथासंभव प्रयास करते हुए अपनी मान्यताओं या मूल्यों की स्थापना पर ज़ोर देते हैं। लगभग उसी तरह की प्रक्रिया अफ्रीकी देशों में भी चली लेकिन भारत से गए प्रवासियों की स्थिति कुछ अलग थी। वे 17वीं,18वीं शताब्दी में भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी

का राज्य स्थापित हो जाने के बाद फ्रांस और पुर्तगाल आदि देशों में होते हुए अफ्रीकी देशों में गए थे। वे इन शासक देशों या जातियों के अधीनस्थ कर्मचारी या मजदूर की हैसियत से गए थे। इसलिए उनकी स्थिति दोयम दर्जे (second-class citizens) के नागरिकों की सी थी। उन्होंने परिश्रम से अपनी जगह बनाई और तंजानिया, केन्या, कांगो, यूगांडा, मोजांबिक, जांबिया आदि देशों के श्रेष्ठ वर्ग में गिने जाने लगे। स्वतंत्रता के बाद भी भारतीयों का तंजानिया, केन्या और यूगांडा में जाना जारी था। उनके परिजन सम्बन्धी/ पूर्वज 150-200 वर्ष से वहां थे इसलिए भारतीयों को अफ्रीकी देशों में उन्नति की संभावना और सुविधा दोनों ही दिखाई दे रही थीं। परम पूज्य गुरुदेव का इन देशों में

जाने का उद्देश्यअपना भविष्य तलाशते और वर्तमान को संवारते लोगों को संपर्क करते हुए मार्गदर्शन देना था। इसके अलावा एकगुप्त उद्देश्य भी था जिसकी अधिक चर्चा नहीं हुई थी। गुरुदेव के साथ गए कार्यकर्ता आत्मयोगी, जहाज़ के कप्तान सदका और वर्षों बाद केन्या के राष्ट्रपिता जोमो केन्याता ने बताया। गुरुदेव जिन दिनों केन्या गए, उन दिनों केन्याता इस देश के राष्ट्रपति थे। उन्होंने केन्या की स्वतंत्रता के लिए एक लंबी लड़ाई लड़ी थी और स्वतंत्रता के बाद देश की जनता ने उन्हीं के हाथों में देश की बागडोर सौंपी थी। केन्या प्रवास के दौरान गुरुदेव उनसे भी मिले थे लेकिन उस बारे में बाद में।

भारत लौटने के बाद आत्मयोगी ने अपने अनुभव विस्तार से बताने के बारे में यह कहते हुए मना कर दिया कि गुरुदेव ने उनकी चर्चा पर रोक लगाई हुई है। अपने निजी अनुभवों को तो वह नहीं ही बताएंगे। जो थोड़ी बहुत जानकारी आत्मयोगी ने दी और वे सूचनाएं किंचित इतिहास से भी मेल खाती हैं। उनके अनुसार अफ्रीका भी भारत की तरह मानवीय सत्त्यता और संस्कृति की मूल भूमि है। भारत में मनुष्य की चेतना ने उन्नति के शिखर छुए हैं और अफ्रीका में मनुष्य की पार्थिव सत्ता ने, उसके कायिक स्वरूप ने, उन्नत स्वरूप प्राप्त किया है। यदि मनुष्य की चेतना को सर्वांगीण विकसित करना हो तो इन दोनों ही सिरों, ध्रुवों या तलों को संवारने की जरूरत है। आत्मयोगी के अनुसार

गुरुदेव की अफ्रीका यात्रा का उद्देश्य वहां के सूक्ष्म जगत में ऐसे बीज बो देना था जिनका विकास भारतीय अध्यात्म चेतना के लिए सहयोगी और पूरक सिद्ध हो सके। अपनी इस धारणा एवं मान्यता के बारे में परिजनों ने आत्मयोगी से विस्तारपूर्वक बताने का अनुरोध किया तो उनके चेहरे पर भय की रेखाए खिंचने लगीं क्योंकि वह वचनबद्ध थे और वे बताना चाह कर भी बता नहीं पा रहे थे।

गुरुदेव इन देशों में 40 दिन रहे और 14 स्थानों पर गए । परिजन इन यात्राओं को याद करते हुए इस कबालियों का उद्बोधन और उनमे सोए हुए संस्कार का जागरण सबसे महत्वपूर्ण- दिखाई देने वाली – घटना समझते हैं । दिखाई देने वाली इस लिए कि

अदृश्य जगत में तो कई घटनाएं हुई जिनका दृश्य संसार में कोई रिकार्ड नहीं रखा गया। "चेतना की शिखर यात्रा" में ऐसा वर्णन भी मिलता है कि गुरुदेव ने 14 स्थानों में से अमृतमंथन कर 14 रत्न निकाले जिन्होंने गायत्री परिवार को न सिर्फ अफ्रीका बल्कि UK, USA ,CANADA आदि देशों में ले जाने का काम किया। राम टाक जी के छोटे भाई पूर्ण टाक जी ने 28 अप्रैल 2020 को whatsapp मैसेज में हमें बताया था : " मुझे आज भी याद है – गुरुदेव का अफ्रीका प्रवास public speeches देने का नहीं था बल्कि कुछ ऐसी आत्माओं के साथ सम्पर्क स्थापित करना था जो अफ्रीका में ही नहीं Canada , USA , UK और दूसरे देशों में भी गायत्री परिवार को लेकर जाएँ "

समुद्री जहाज़ पर परम पूज्य गुरुदेव और कैप्टन डेंगला की दिव्य वार्ता

परम पूज्य गुरुदेव की अफ्रीका देशों की यात्रा का विवरण आरम्भ करने से पूर्व एक बात स्पष्ट करना बहुत ही आवश्यक है। आगे आने वाले पन्नों में जिस जहाज़ का नाम "मिरियांबो" बताया गया है, हमने जिज्ञासावश गूगल से extensive रिसर्च की। जब हमें गूगल से यही रिप्लाई मिला " Your search – मिरियांबो – did not match any documents" तो जैसे अक्सर होता आया है गुरुदेव ने अपना अनुदान भरा हाथ हमारे शीश पर रख दिया। हमें 2015 का एक लिंक मिल गया जो हमने नीचे दिया हुआ है। यह एक वेबपेज है और लेखक का जन्म "एस एस करंजा" नामक जहाज़ पर ही हुआ था। हमारा माथा ठनका कि कहीं यही जहाज़ तो नहीं जिससे गुरुदेव ने इन देशों की यात्रा की थी। वैसे तो

ऐसी परिस्थिति में (जहाँ तथ्य उपलब्ध ने हों) कुछ भी विश्वास से कहना कठिन है लेकिन हमारा अंदेशा ठीक ही लगता है क्योंकि उस समय भारत और अफ्रीकी देशों का कनेक्शन यही जहाज़ था। अगले पैराग्राफ में यह बात certify होती दिख रही है। पाठकों से निवेदन है कि अगर इस सम्बन्ध में किसी के पास कोई पुख्ता जानकारी हो तो हमें बताए ताकि हम संशोधन कर सकें।

एक और बात, जो केवल हमारे व्यक्तिगत विचार हैं कि परम पूज्य गुरुदेव अवश्य ही तृतीय श्रेणी में गए होंगें; जिन्होंने कभी रेलयात्रा थर्ड क्लास के इलावा किसी और क्लास में नहीं की, वह जहाज़ में भी वैसे ही जायेंगें। पूज्यवर हवाई यात्रा भी कर सकते थे जो केवल

5-6 घंटे की है और आरामदायक भी, लेकिन उन्होंने 15-20 दिन की कठिन समुद्री यात्रा का चयन किया क्योंकि वह एक औसत भारतीय का जीवन व्यतीत करते थे।

तो अब आरम्भ करते हैं यात्रा का विवरण

1948 में लॉन्च किया गया समुद्री जहाज़ “एस एस करंजा” भारत और केन्या के बीच सबसे महत्वपूर्ण कनेक्शनों में से एक है। इसे ब्रिटिश इंडिया लाइन का गौरव प्राप्त है और इसने लगभग तीन दशकों तक इस समुद्री मार्ग की सेवा की। स्टीम टर्बाइन से चलने वाला यह स्टीमर माह में केवल दो बार ही क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय श्रेणी में 60, 180 और 825 यात्रियों को ले जा सकता था । यह एस एस करंजा

आमतौर पर हिंद महासागर में दक्षिण एशिया से यात्रियों को लेकर अफ्रीका और वापसी यात्रा करता था। इस जहाज़ ने बम्बई (मुंबई) को केन्या, तंज़ानिया, ज़ांज़ीबार,मोज़ाम्बिक और दक्षिण अफ्रीका आदि देशों से जोड़ा। स्वतंत्रता के बाद के दशक में केन्या और भारत के बीच यातायात कम हो गया, जिससे समुद्री मार्ग लाभहीन हो गया इसलिए 1988 में इसे रिटायर कर दिया गया।

ब्रिटिश शासन के अंतिम वर्षों में एस एस करंजा केन्या और भारत के बीच महत्वपूर्ण संबंध स्थापित किये हुए था। इसके सम्बन्ध में अनेकों भारतीय समुदायों की कहानियां हैं, उन्ही में से एक उस व्यक्ति की भी है जो 1968 में 10-दिवसीय यात्रा के दौरान इसी जहाज़

पर पैदा हुए थे,यहाँ प्रस्तुत विवरण इसी लेखक के हैं। पाठक इस लिंक को क्लिक करके उनके बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। करंजा वास्तव में एक भारतीय नाम है जो महाराष्ट्र में एक शहर है। इसका नाम संत करंज के नाम पर रखा गया है और यह मुसलमानों, हिंदुओं और जैनियों के लिए एक पवित्र स्थान है। संत करंज को अपना नाम करंज वन से मिला।

लगभग 700 यात्रियों को लेकर मुंबई से रवाना हुआ जहाज मिरियांबो केन्या की समुद्री सीमा को छूने ही वाला था। यात्रा का 18वां दिन था। दो दिन बाद मोंबासा बंदरगाह पर लगना था। जहाज में करीब चार सौ लोग केन्या और यूगांडा के थे। बाकी तंजानिया,

रवांडा, पुरुडी आदि पूर्वी अफ्रीकी देशों के थे। इनमें वहाँ के मूल निवासी, ब्रिटिश और भारतीय नागरिक भी थे। मिरियांबों की तीसरी मंजिल पर बने केबिन में पिछले दो सप्ताहों से यात्रियों की आवाजाही जहाज़ के दूसरे हिस्सों की तुलना में कुछ अधिक ही थी। एक पूरे टापू की तरह लगने वाले जहाज़ की डेक पर और केबिन में लगे शीशों से झांकने पर चारों ओर अगाध जलराशि दिखाई देती थी, इसके सिवाय और कुछ भी नहीं। हिंद महासागर में उठती हुई ऊँची लहरें और कभी समुद्र की शान्त निश्चल काया को देखते निरखते यात्रियों का मन भर जाता तो वे अपनी जगह आकर बैठ जाते, आपस में बातचीत करते या कुछ पढ़ने-लिखने में मन लगाते।

अक्सर बातचीत के विषय निजी, पारिवारिक और व्यावसायिक सभी स्तर के होते थे।

जब भी यात्री तीसरी मंज़िल पर बने उस केबिन में जिसकी बात हम कर रहे हैं, जाते तो घण्टों मन लौटने का नहीं होता। कुछ तो मन ही मन सोचने लगते कि यात्रा के बाकी दिन इसी केबिन में कट जाएं तो कितना अच्छा हो।गुरुदेव इसी केबिन में रुके हुए थे, उनके पास यात्रियों को विलक्षण शांति और ऊर्जा मिलती थी। आने जाने वाले यात्रियों में 90% लोग ऐसे थे जिन्होंने गुरुदेव को पहली बार देखा था। जब जहाज़ ने मुंबई की बंदरगाह से समुद्र में केन्या जाने के लिए अपने पांव बढ़ाए थे तो कैप्टन सदका डेंगला के लिए गुरुदेव भी अन्य यात्रियों की तरह थे। गुरुदेव के साथ गायत्री

परिवार के केवल एक ही वरिष्ठ कार्यकर्ता (चित्र में दाढ़ी वाले युवक) थे। दूसरे केबिन या स्पेशल श्रेणियों में यात्रा कर रहे लोगों के साथ निजी सहायक के अलावा सेवकों/सहयोगियों की संख्या 10-12 तक थी। जहाज़ के कर्मचारी या परिचारक तो होते ही थे । कैप्टन सदका और जहाज़ के दूसरे कई विशिष्ट यात्रियों को शुरु में ऐसा कुछ नहीं लगा कि वे गुरुदेव की ओर देखते। भारत की समुद्री सीमा पार मिरियांबों पड़ोसी देश मालदीव के पास पहुँचा ही था कि जहाज में सवार कुछ यात्रियों को मनोविक्षोभ(mental illness, psychosis) ने घेर लिया। वे अपने घर, परिवार, परिजनों और मित्र संबंधियों को रह-रह कर याद करने लगे। समुद्री यात्रा में यह बीमारी

आमतौर पर हो ही जाती है। मुश्किल से 25-30 किलोमीटर की गति से तैरने वाले जहाज़ पर यात्रियों को चारों तरफ पानी ही पानी दिखाई देने लगता है तो भांति-भांति की कल्पनाएं/कुंठाएं मन में उभरने लगती है। जहाज़ में साथ चल रहे चिकित्सक ऐसे यात्रियों को प्रायः sleeping medicines देते हैं ताकि वे सो जाएं और समय तथा प्रकृति स्वयं उपचार कर दे। मनोविक्षोभ के शिकार 16 लोग तो 2-3 दिन में ही सामान्य हो गए लेकिन पांच की हालत नहीं सुधरी। मिरियांबो जहाज के चिकित्सा कक्ष में उनकी अब भी देखभाल हो रही थी। कैप्टन सदका उनके लिए थोड़ा चिंतित थे कि यदि उनकी हालत नहीं सुधरी तो जहाज का रुख मोड़ना न पड़े और रास्ते में आने वाले

दियागो गार्शिया(Diego Gracia या सेशेल्स(Seychelles) द्वीपों में उन्हें कहीं उतारना पड़े। अगर ऐसी नौबत आई तो यात्रा का समय दो तीन दिन और बढ़ जाएगा।

जिस प्रकार की mental illness की बात हम कर रहे हैं, उसे Jetlag से मिलाया तो नहीं जा सकता लेकिन कुछ इसी तरह लम्बी हवाई यात्रा में भी होता है। इसीलिए सलाह दी जाती है कि लम्बी नॉन स्टॉप फ्लाइट्स लेने के बजाय यात्रा में ब्रेक आये तो अच्छा होता है लेकिन समय तो किसी के पास है नहीं ,हर कोई नॉन स्टॉप फ्लाइट ही prefer करता है।

इन्हीं विचारों में डूबते- कैप्टन डेंगला डैक पर आए तो उन्होंने देखा कि गुरुदेव पास ही पड़ी कुर्सियों में से एक

को केबिन के पास खींच कर, जहाँ से समुद्र की जलराशि निकटतम दूरी पर दिखाई देती है, बैठे हुए हैं। कैप्टन ने उन्हें दो दिन पहले भी इसी मुद्रा में देखा था लेकिन उस समय ध्यान नहीं गया था। अब उनका मन समुद्री mental illness से बेहाल हो रहे यात्रियों के प्रति चिंतित हो रहा था। गुरुदेव को डैक पर बैठे देख कैप्टन डेंगला को उनसे कुछ चर्चा करने की इच्छा हुई। दूर कहीं समुद्र को छू रहे क्षितिज पर सूर्य देवता लहरों में उतरने की तैयारी कर रहे थे। संध्या का समय था, कैप्टन ने देखा कि गुरुदेव सूर्य को निहार रहे थे। कुछ पल वह चुपचाप देखते रहे,फिर गुरुदेव के पास जाकर बातचीत आरम्भ की। कुछ ही मिंटों में वह गुरुदेव के साथ खुल से गए और 10-15 मिंट के भीतर

ही उन्होंने जहाज़ में बीमार यात्रियों से लेकर अपने कामकाज, घर, परिवार और सामाजिक जीवन के बारे में बहुत सारी बातें कर डालीं। उस समय कैप्टन की आयु 45 वर्ष थी, उन्होंने बचपन से लेकर आजतक का सारा व्योरा गुरुदेव के समक्ष खोल कर रख दिया।

कैप्टन कह रहे थे कि मुझे बच्चों से मिले आठ महीने हो गए हैं।आप कोई उपाय कीजिए कि मैं उनसे मिल सकूं, उनके बारे में जान सकूं। अभी तो मुझे यात्रा के दौरान ही कहीं किसी पड़ाव पर उनके बारे में पता चल पाता है। तीन माह पूर्व उनसे दार-एस-सलाम (Dar es Salaam) में पोर्ट पर टेलीफोन से ही बात हो सकी थी। Dar es Salaam, तंज़ानिया का पोर्ट नगर है गुरुदेव

ने कैप्टन सदका की ओर देखा। कुछ पल निहारने के बाद कहा,

“तुम चाहो तो अभी यहीं बैठे-बैठे ही उनसे मिल सकते हो। उन्हें देख सकते हो।” कैप्टन चौंक उठे ,व्यग्र होकर उन्होंने पूछा, “कैसे ? मैं उनसे बात भी कर सकता हूँ क्या ?”

गुरुदेव ने कहा, “नहीं”,बात तो कर सकते हो लेकिन वे लोग शायद नहीं कर पाएं। अचानक तुम्हे अपने सामने देखकर वे डर सकते हैं।”

कैप्टन ने बच्चों की तरह पुलकित होते हुए कहा, “तो मुझे उन्हें देख ही लेने दीजिए साहब। मैं इतने में ही संतुष्ट हो जाऊंगा।”

इस बीच गुरुदेव के पास ही खड़े परिजन ने कहा, “हमारे लिए ये गुरुदेव हैं, बेहतर होगा कि आप भी इन्हें इसी तरह देखें, आपको आसानी रहेगी।”

कैप्टन ने कहा, “हाँ,हाँ गुरुदेव, मुझे उनसे दूर से ही मिला दीजिए। मैं उनसे बाद में मिलूगां तब बातचीत कर लूंगा।”

कहते हुए कैप्टन गुरुदेव के सामने घुटनों के बल बैठ गए । गुरुदेव ने उनके सिर पर दाहिना हाथ रखा और स्नेह से दुलार दिया। गुरुदेव ने 2-3 बार कैप्टन के सिर पर हाथ फेरा ही था कि उनकी आंखें बंद हो गई। घुटनों के बल बैठे-बैठे वह वहीँ पालथी मार कर बैठ गए । बैठने की मुद्रा में यह बदलाव अनायास ही आया था और फिर उन्होंने अपनी दोनों हथेलियां गोद में रख

ली जैसे ध्यान की अवस्था में चले गए हों। करीब दस मिन्ट तक वह इसी स्थिति में रहे। धीरे धीरे आंखें खोली और गुरुदेव की ओर देखा। आँखें खोलते हुए पलकें उघाड़ते ही उसकी पुतलियों में खुशी की चमक नाच उठी थी और गालों पर आंसुओं की कुछ बूंदें लुढ़क आई थीं। अश्रुपूरित नयनों में कृतज्ञता के विभोर हुए भाव तैर रहे थे। देर तक गुरुदेव की ओर अपलक निहारने के बाद उनके मुंह से इतने ही शब्द निकले, “आपकी दुआ से मैं अपने बच्चों को देख सका गुरुदेव। उनसे मिला भी और उन्हें प्यार भी किया। मेरी मां अब ठीक होती जा रही है और पत्नी उसकी अच्छी तरह से देखभाल भी कर रही है, इतनी अच्छी तरह कि मुझे ऐसी आशा भी नहीं थी।”

कैप्टन सदका ने पराभौतिक माध्यम ((celestial) से अपने परिजनों को देखा और उनके प्रति स्नेह लुटाया। उन लोगों को भले ही अपने अभिभावक की सन्निधि का भान नहीं हुआ हो लेकिन कैप्टन उन्हें देख और अनुभव कर गदगद हो उठे। इस घटना के बाद तो वह गुरुदेव के भक्त हो गए। इस घटना के बाद कैप्टन गुरुदेव के केबिन में अधिकतर आने लगे, उनकी ज़रूरतों के बारे में पूछते,अपनी ओर से सुविधाएं देने की कोशिश करते। समय मिलने पर अपने अतीत की एवं परिवार तथा आकांक्षाओं के बारे में बातें करते। कैप्टन की देखादेखी जहाज के और अधिकारी भी गुरुदेव के पास आने लगे क्योंकि सदका जहाज़ के उच्चाधिकारी थे। 2-3 दिन में तो ऐसी स्थिति बन गई कि अधिकारी या जहाज का

स्टाफ ही नहीं, यात्री भी गुरुदेव की सन्निधि पाने के लिए केबिन में,या आसपास मंडराते दिखाई देने लगे।

कैप्टन सदका ने यात्रा के चौथे दिन पूछा,

“गुरुदेव आपने जिस तरह मुझे अनुगृहीत किया, तंजानिया या जिन देशों में जा रहे हैं, वहां अन्य लोगों को भी उपकृत करेंगे क्या ?”

गुरुदेव ने कहा, “देखा जाएगा।”

कैप्टन ने इन दो शब्दों को पकड़ लिया और कहने लगे,

“आप दूसरों पर भी उपकार करेंगे। मुझे विश्वास है।किलोसा और शिनयांगा छोटे-छोटे दो कस्बों में मेरे

4-5 पारिवारिक मित्र रहते हैं। मैं उन्हें आपके बारे में बता देता हूँ। हो सके तो उन पर भी कृपा कीजिएगा।”

गुरुदेव ने इस अनुरोध का कोई उत्तर नहीं दिया । कुछ पल सदका की ओर देखते रहे और फिर बोले,

“देखो कैप्टन,तुम चाहो तो मेरा भी एक काम कर सकते हो।”

14 दिन में गुरुदेव ने एक नई भाषा सीख ली

कैप्टन भारतीय ढंग से हाथ जोड़ कर गुरुदेव के सामने घुटनों के बल बैठ गया और बोला, “कृपा करके आप मुझे कैप्टन मत कहिए गुरुदेव, मुझे मेरे नाम से ही बुलाइए, सदका,सिर्फ सदका ही कहिए देंगल भी नहीं ।

‘

गुरुदेव ने कहा, “ठीक है। पर यह तो बताओ कि तुम मेरा काम करोगे या नहीं। छोटा सा काम है।”

सदका ने गुरुदेव का वाक्य बीच में ही पकड़ कर कहा “आप आज्ञा तो करें जनाब। मेरा नाम भी सदका देंगल है जिसका मतलब होता है -सच्ची खुशी- मैं अपने नाम के लिए सब कुछ करने को तैयार हूँ।” सदका भाव विह्वल हो रहे थे ।

गुरुदेव ने कहा, “मेरा काम भी कुछ ऐसा ही है। अभी हम लोगों को दार-एस-सलाम (Dar-es-Salaam) पहुँचने में 15-16 दिन लगेंगे।”

लेकिन आपको तो मोंबासा जाना है न गुरुदेव, सदका ने बीच में ही रोकते कहा तो गुरुदेव ने जैसे अपनी बात में संशोधन किया, “हां मोंबासा ही सही, लेकिन वहां

तक पहुंचने में एकाध दिन और कम हो सकता है। समझ लो कि चौदह दिन। इस दौरान तुम मुझे अपनी भाषा सिखा सकते हो।"

सदका ने आश्चर्य से कहा, "मुझे खुद अपनी स्वाहिली भाषा नहीं आती गुरुदेव । मैं आप जैसे विद्वान व्यक्ति को क्या सिखा सकता हूँ ।"

गुरुदेव ने कहा ,"मुझे स्वाहिली भाषा का कोई विद्वान थोड़े ही बनना है, 'इतनी जानकारी काफी है कि वहां के लोगों से बात कर सकूं, उन्हें अपनी बात कह सकूं और उनकी बात समझ सकूं।"

सदका ने तुरन्त हामी भरी और साथ ही में असमंजस भी व्यक्त किया कि उन्हें अध्यापन का कोई अनुभव

नहीं है, वह कैसे सिखाएंगें। गुरुदेव ने यह कहकर उनका संकोच दूर कर दिया कि तुम्हे कुछ नहीं करना है । मैं खुद तुमसे पूछता चलूंगा। तुम उसका उत्तर देते चलना बस। मुझे जहाँ कुछ खास समझना होगा वहाँ अलग से पूछ लूंगा ।गुरुदेव के इस उत्तर से सदका का संकोच दूर हो गया। हमारे पाठक जानते होंगें कि स्वाहिली पूर्वी अफ्रीका के चार प्रमुख देशों (तंजानिया, केन्या, यूगांडा और कांगों) की आधिकारिक भाषा है । 1972-73 में इस भाषा को राजकीय भाषा का दर्जा प्राप्त था हालांकि सरकारी काम अंग्रेजी में ही होता था। यों तो स्वाहिली भाषा हिंद महासागर में स्थित अफ्रीकी द्वीपों के आदिवासी कबीलों में खूब बोली समझी जाती थी लेकिन व्यापार, व्यवसाय में

अंग्रेजी,अरबी और पश्तो का ही अधिक चलन था। चारों देशों में जहां गुरुदेव को जाना था, आबादी का दो तिहाई हिस्सा स्वाहिली में ही बातचीत करता था | आधे से अधिक लोग तो ऐसे थे जो इस भाषा के सिवा अन्य कोई और भाषा समझते ही नहीं थे।

केप्टन सदका ने गुरुदेव को स्वाहिली पढ़ाने की बात जैसे ही स्वीकार की गुरुदेव ने पूछा, "इस भाषा का अर्थ क्या है ?"

कैप्टन सदका ने कहा, "सीमा,समुद्री किनारा।"

उन्होंने ही बताया, प्रारंभिक शिक्षा में सीखा था कि स्वाहिली में पांच स्वर होते हैं और 38 वर्ण । शुरु के दिनों में कैप्टन ने "मैं, तुम, आप, यह, वह, पानी आदि

सर्वनाम और संज्ञाओं से परिचय कराया। कुछ वाक्यांश बताए।" गुरुदेव ने जिस क्षण स्वाहिली भाषा सीखने की इच्छा जताई थी, उसी क्षण से कैप्टन सदका गुरुदक्षिणा चुकाने के साथ अपनी खुद की योग्यता बढ़ाने में भी लग गए थे। गुरुदेव ने अफ्रीका की लोक भाषा सीखने के लिए कहते ही विनोद में कह दिया था कि अब शिष्य को भी गुरु का दायित्व निभाना चाहिए । इस पर सदका बहुत दुःखी हुए, रो-रो कर अपना बुरा हाल कर लिया था। रोने का कारण यही था कि आप मुझे इस तरह दंड मत दें। मुझे गुरु क्यों कहते हैं।   गुरुदेव ने उन्हें बहुतेरा समझाया पर वह यही कहते रहे कि

गुरुदेव मेरी जगह आपके चरणों में है। गुरुदेव ने उन्हें दूसरी तरह समझाया कि शिष्य का कर्त्तव्य दक्षिणा देना भी होता है। तुम दक्षिणा देने के नाते ही मुझे अपनी भाषा सिखाओ। यह सुन कर सदका का संताप थोड़ा कम हुआ। इसके बाद गुरुदेव ने सदका के सिर पर हाथ रखा,गुरुदेव के होंठ हिले ओर सदका को लगा कि उनके शरीर के भीतर विस्मयकारी तरंगें दौड़ने लगी हैं, सिर्फ उसी ने महसूस किया और गुरुदेव के वचनों को सुना कि “तुम्हारी आकाक्षां पूरी हो।” डेक पर पास ही बैठे आत्मयोगी ने गुरुदेव को कहते सुना,

“इस व्यक्ति ने गायत्री की सही मायने में उपासना की है, उसे अपने भीतर धारण किया है। तप किया हो या न

किया हो, गायत्री की ऋषि आत्मा को जरूर सिद्ध कर लिया है।”

अफ्रीका यात्रा में जहाज़ पर नौ दिवसीय सत्र

मिरियांबो जहाज 25-30 किलोमीटर प्रति घंटा की गति से समुद्र की छाती पर किसी विशाल बतख की सी मस्त चाल से तैरता हुआ जा रहा था। गुरुदेव के केबिन और डेक पर जहां कहीं भी गुरुदेव बैठते, साधना और स्वाध्याय की गतिविधियां चलती ही रहती थीं । शुरु के कुछ दिन तो अपरिचय/एकांत के वातावरण में ही बीते लेकिन बाद में गुरुदेव की उपस्थिति की रश्मियां बिखरने लगी और कैप्टन सदका एवं उनके सहयोगी साथियों ने भी जहाज़ पर एक "दिव्य पुरुष" के होने की खबर फैलाई।10-12 दिन बीतते-बीतते गुरुदेव के आसपास जिज्ञासु और धर्मभाव संपन्न व्यक्तियों का जमावड़ा लगा रहने लगा। इस जमावड़ा का प्रभाव

देखकर गुरुदेव ने इन उत्सुक श्रद्धालुओं के लिए नौ दिन के शिविर की घोषणा कर दी। नौ दिन के साधना अनुष्ठान का विधि विधान और महत्व सुनकर 17 साधक तैयार हुए। वे गायत्री जप और ध्यान के साथ व्त उपवास और भूमिशयन के नियमों का पालन भी करते। करीब 40 साधक ऐसे निकले जिन्होंने खानपानमें सात्विकता का समावेश किया। मांसरहित भोज ओर भूख से कम खाने के नियमों का पालन करते हुए साधकों ने जप-तप और पूजा पाठ किया।साधना उपासना के इस वातावरण का आस्वाद लेते हुए यात्री शिशेल्स द्वीप समूह को पार करते हुए केन्या की बंदरगाह मोंबासा का तट आ गए ।
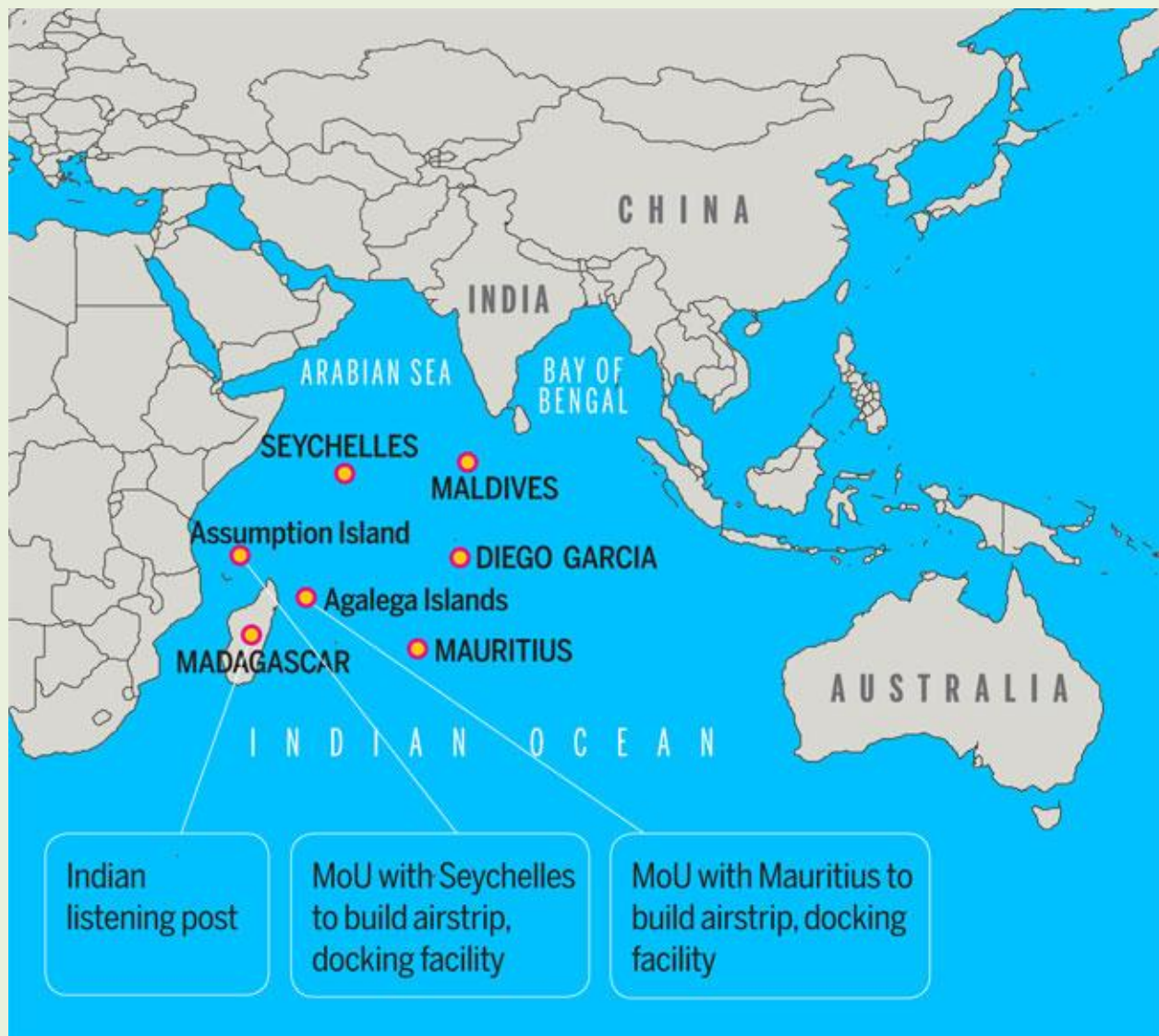
सेशेल्स (Seychelles) हिंद महासागर में स्थित 115 द्वीपों वाला एक द्वीपसमूह राष्ट्र है। सेशेल्स एक रोमांटिक द्वीप समूह के अलावा एक खूबसूरत देश भी है। यह द्वीप समूह दुनिया के खूबसूरत द्वीपो में गिना

जाता है।यहाँ बहुत ही कम खर्च में पर्यटन किया जा सकता है। यहाँ मालदीव जैसे दृश्य देखने को मिलते हैं। यह द्वीप समूह चारों ओर से सागरों से घिरा हुआ है। सेशेल्स के वर्तमान राष्ट्रपति वेवेल रामकलावन हैं जिनके पूर्वज बिहार के गोपालगंज के बरौली प्रखंड के परसौनी गांव के नोनिया टोली के रहने वाले थे। रामकलावन जनवरी 2018 में बिहार आए थे। अपने पुरखों की धरती गोपालगंज पहुँचने पर रामकलावन ने बिहार और अपने पुरखों की धरती को अपना बताते हुए कहा था कि आज मैं जो भी हूं, इसी उर्वरा धरती की देन है। मैं यह तो नहीं जानता कि मेरे पूर्वजों के परिवार के लोग कौन हैं, लेकिन इस धरती पर पहुंचते

ही ऐसा आभास हो रहा है कि “हर घर मेरा अपना ही है”

अनुष्ठान आदि में दो दिन का समय बचा था। नौ दिन की साधना अवधि पूरी होना कठिन लग रहा था। गुरुदेव ने व्यवस्था दे दी थी कि दो दिन की साधना अपने घर पहुँच कर की जा सकती है। साधकों में से कई प्रार्थना करने लगे थे कि जहाज़ की गति धीमी हो जाए ओर गुरुदेव का सान्निध्य दो दिन और मिल सके तो मजा आ जाए। उनके प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में ही साधना पूरी हो जाए।

सोमालिया के किसमायो बंदरगाह तक पहुँचते-पहुँचते सूचना मिली कि जहाज को मोंबासा रुकने की अनुमति नहीं मिल रही है। इसका कोई कारण नहीं बताया गया

था। जहाज़ पर चली चर्चा के अनुसार
डिप्लोमेटिक कारण भी थे और तकनीकी भी।
डिप्लोमेटिक कारणों में एक तो यह था कि सोमालिया
और केन्या में तनाव चल रहा था । केन्या के
अधिकारियों ने आशंका जताई थी कि जहाज़ में
सोमालिया से कुछ अवांछित प्रवासी भी सवार हो
सकते हैं जिन्हें पहचानना और रोकना प्रशासनिक दृष्टि
से मुश्किल काम होगा।

सोमालिया के वर्तमान राष्ट्रपति का भी भारत से
सम्बन्ध रहा है। 1988 में उन्होंने बरकतुल्लाह
यूनिवर्सिटी जो भोपाल यूनिवर्सिटी हुआ करती थी, से
टेक्निकल एजुकेशन में MA की डिग्री प्राप्त की।

तकनीकी कारणों में जहाज़ के अधिकारियों के अनुसार कुछ यांत्रिक गड़बड़ियां थीं जिन्हें मोंबासा में ठीक नहीं किया जा सकता था। डिप्लोमेटिक यां तकनीकी कारण, जो भी हों, जहाज़ में साधना कर रहे उपासकों के लिए तो "यह स्थिति एक वरदान जैसी थी" क्योंकि उन्हें बिना मांगे ही गुरुदेव के साथ दो दिन और रुकने का अवसर मिल गया। यद्यपि गुरुदेव को मोंबासा ही उतरना था किंतु जहाज को वहां रुकने की अनुमति नहीं मिली तो उन्होंने तनिक भी शिकायत नहीं की। साथ चल रहे आत्मयोगी ने इस बारे में चर्चा छेड़ी तो गुरुदेव ने कहा, "हमें यहां के लोगों के बीच कुछ दिन और रहने का मौका मिल जाएगा।"

जहाज़ ने रूट बदला

मोंबासा जाते हुए जहाज़ मुड़कर दक्षिण दिशा में जंजीबार के पास होते हुए दार-एस- सलाम (Dar-es-salaam) पहुंचा। दार-एस- सलाम जिसका शाब्दिक अर्थ शांति का स्वर्ग होता है, तंज़ानिया देश का सबसे बड़ा पोर्ट सिटी है। यह नगर भी पर्यटन के लिए बहुत प्रसिद्ध है।
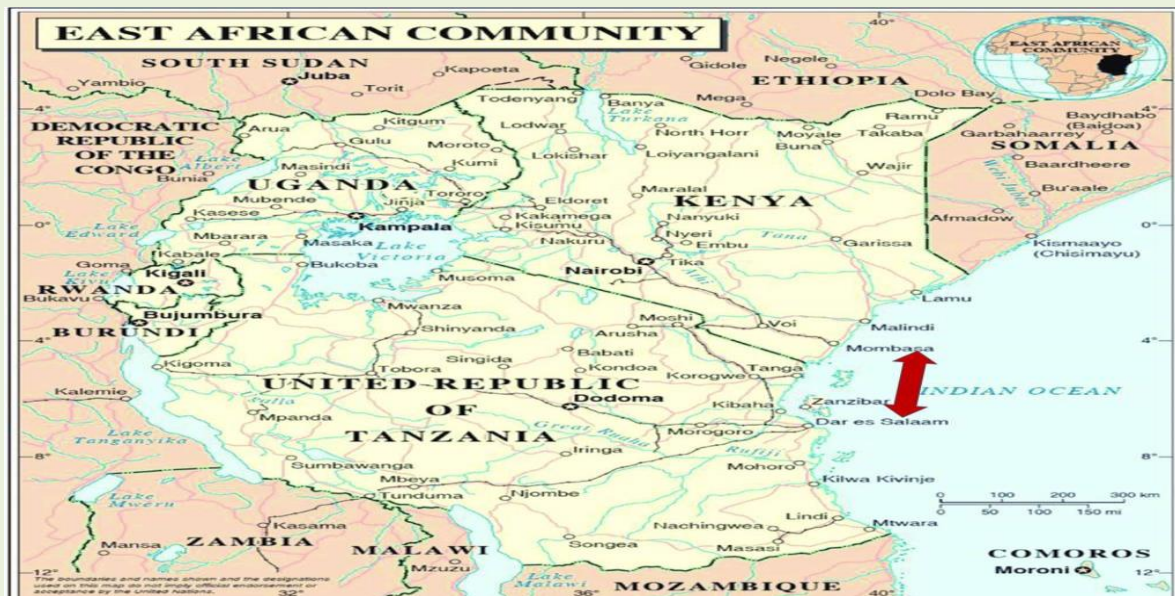
केन्या में गुरुदेव के आने की तैयारिआं हो रही थीं,इस बदलाव से परिजनों को असुविधा तो ज़रूर हुई। जिन

दिनों में कार्यक्रम निश्चित हुए थे, उन्हें आगे खिसकाना पड़ा । पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आयोजनों की श्रृंखला मोंबासा (केन्या) से शुरु होकर नैरोबी, मेबां, वडुंगा, आदि शहरों में और मार्ग में पड़ने वाले कस्बों गाँवों से होकर गुजरनी थी। अब यह क्रम उलट देना पड़ा और कार्यक्रम दार-एस-सलाम (तंज़ानिया) से शुरु हुआ।

यहाँ दिए जा रहे विवरण को समझने के लिए ईस्ट अफ्रीका का नक्शा शामिल किया गया है। मोंबासा केन्या देश का नगर है और दार-एस-सलाम तंज़ानिया देश का, केन्या और तंज़ानिया पड़ोसी देश हैं।

गुरुदेव दार-एस-सलाम उतरे तो उन्होंने कार्यक्रमों में कोई ज़्यादा फेरबदल न करने का सुझाव दिया। नए

सिरे से विचार किया गया तो निश्चित हुआ कि दार-एस-सलाम से मोंबासा तक की यात्रा सड़क मार्ग से पूरी कर ली जाए।

मोंबासा में शुरु होने वाले शुरुआती कार्यक्रमों की तिथियां बदली जाएं और बाकी स्थानों पर कार्यक्रम यथावत ही रखे जाएं। ईस्ट अफ्रीका में 19 स्थानों पर आयोजन थे। इस क्षेत्र के प्रत्येक देश में कम से कम एक। यों परिजनों ने बुरुंडी,कोमोरोस, जिबौती, इरीट्रिया, इथियोपिया, मेडागास्कर आदि देशों में दो-दो तीन-तीन आयोजन रखे थे लेकिन गुरुदेव का सभी कार्यक्रमों में जाना मुश्किल था । वे केवल 6 सप्ताह के लिए इन देशों की यात्रा पर आए थे इसलिए ईस्ट अफ्रीका के प्रवासी परिजनों ने इतने पर ही संतोष किया।

East African countries (19) – Burundi, Comoros, Djibouti, Ethiopia, Eritrea, Kenya, Madagascar, Malawi, Mauritius, Mozambique, Réunion, Rwanda, Seychelles, Somalia, Somaliland, Tanzania, Uganda, Zambia, and Zimbabwe.

दार-एस-सलाम के शुरुआती कार्यक्रम और गोष्ठी के बाद गुरुदेव सड़क मार्ग से मोंबासा के लिए रवाना हुए। बंदरगाह के करीबी शहर कोरोग्वे(Korogwe) से रवाना हुए ही थे कि तीन चार किलोमीटर चलने पर घना जंगल शुरु हो गया।

गुरुदेव के समक्ष खूंखार आदिवासियों का समर्पण :

गुरुदेव के साथ वहां के गायत्री परिवार के पांच परिजन और भारत से आए आत्मयोगी थे । कुल सात लोगों का काफिला तीन गाड़ियों में था । गुरुदेव बीच वाली गाड़ी में थे । तीन चार किलोमीटर पर ही घना जंगल शुरू हो जाता था ।यात्रा आठ- दस किलोमीटर ही गई होगी कि पत्तों के बीच सरसराहट हुई और लगा जैसे पचास साठ कदम एक साथ कदमताल करते हुए चल रहे हों । सभी के चेहरों पर चिंता की लकीरें उभरीं। उन्हें लगा जंगली जानवरों का कोई छोटा मोटा झुंड होगा । पता नहीं लग रहा था कि यह जंगली जानवर नीलगाय हैं या फिर हिंसक प्रवृति के आदिवासी। सभी असमंजस में थे। लेकिन तीनो गाड़ियों के ड्राइवर चौकन्ने हो गए। आवाज़

जैसे ही पास आई उनमें से एक चिल्लाया , “भागो जान बचाओ” कहते हुए वह जिधर से आए थे उधर ही चले गए । कुछ ही देर में परिजनों ने देखा 25-30 आदिवासियों का समूह आकर प्रकट हो गया ।

उन लोगों ने कमर से नीचे रंग बिरंगे कपडे पहने हुए थे ।ऊपर कुछ नहीं पहना था । गले में कौड़ियों की माला और हाथ में नुकीले सिरे वाले लम्बे सरिए। देखते ही देखते इन सब ने तीनों गाड़ियों को घेर लिया और अजीब -अजीब सी आवाज़ें निकालने लगे । इन्होनें गाड़ियों में बैठे लोगों की तरफ अपने तेज शस्त्र तान दिए । सभी लोग डर गए। साथ बैठी महिलायें तो थर-थर कांप रही थीं ।आदिवासियों ने 3-4 बार शस्त्र दिखाए और चिल्लाये, फिर अगले ही पल शांत भी हो गए। ऐसा लग रहा था वह अपना अगला कदम सोच रहे होंगें । इसी बीच गुरुदेव ने अपने दांये हाथ से इशारा किया और बाएं हाथ से गाड़ी का द्वार खोल कर बाहर आ गए । गुरुदेव का उठा हुआ हाथ देख कर

आदिवासी कुछ पीछे हट गए। आदिवासियों के पीछे हटते ही गुरुदेव ने हाथ नीचे कर लिया और कुछ कहा। “क्या कहा ,कोई नहीं जानता। किसी को कुछ समझ नहीं आया” गुरुदेव के हाथ नीचे करते ही आदिवासियों ने मशीनी तत्परता से हथियार नीचे रख दिए। जिस तेजी से हथियार नीचे रखे उतनी ही तेजी से वह नीचे झुके और गुरुदेव को साष्टांग प्रणाम करने के लिए नीचे भूमि पर लेट ही गए।अपनी जीभ बाहर निकाली और हाथ ऊपर कर दिए। इतना करने पर गुरुदेव ने एक बार फिर कुछ कहा आदिवासियों ने उत्तर भी दिया और उठ कर खड़े हो गए। किसी को नहीं मालूम हुआ क्या वार्तालाप हो रहा है। गुरुदेव ने गाड़ियों में बैठे परिजनों को देखा और कहा आप अब निश्चिंत रहें डरने की कोई

बात नहीं “यह सब अपने ही लोग हैं।” अखंड ज्योति संस्थान मथुरा (भूतों वाली बिल्डिंग) में भी गुरुदेव का ऐसा ही प्रतिकर्म था। यह निलोत (Nilotes) जाति के लोग थे। जिस भाषा में गुरुदेव ने उनके साथ बात की उस के केवल पांच सात सौ शब्द हैं। इस भाषा को बांटू कहते हैं आज भी यह भाषा विश्‌व के 27 अफ्रीकी देशों में बोली जाती हैं। बांटू के अंतर्गत कोई 600 के लगभग भिन्न भिन्न प्रकार की भाषाएँ आती हैं। भारत से गुरुदेव के साथ आए आत्मयोगी को बड़ी हैरानगी हुई गुरुदेव ने यह भाषा इन आदिवासियों के साथ कैसे बोल ली।

आत्मयोगी के बारे में जब हमने विद्या परिहार जी से पूछा तो उन्होंने कहा गुरुदेव के साथ भारत से एक दाढ़ी वाले पुरष आये थे। लेख के साथ पिक्चर में आप जो

दाढ़ी वाले देख रहे हैं यह वही हो सकते हैं। यह पिक्चर भी विद्या जी ने ही हमें उपलब्ध कराई थी। नैरोबी में गुरुदेव विद्या परिहार के घर में ही ठहरे थे। विद्या परिहार जी के बारे में अगर अधिक लिखेंगें तो लेख की दिशा कहीं और ही चली जाएगी लेकिन नीचे दिए गए वीडियो लिंक को आपने पहले भी देखा है,एक बार फिर से देखना अनुचित न होगा।

https://youtu.be/o_793AOO680

गुरुदेव ने गाड़ी के छत पर बैठ कर सम्बोधन किया

थोड़ी ही देर में वर्षा जैसा वातावरण बन गया और यह सब आदिवासी नाचने लगे । उनकी उमंग जब स्थिर हुई तो गुरुदेव ने कहा “आप सब भूल गए हो पर हमको याद है ।हज़ारों वर्ष पूर्व हमने आपके साथ इस धरती

पर काम किया है” गुरुदेव ने अभी कहना शुरू ही किया था तो एक आदिवासी आगे आकर कहने लगा :

“आप ऊंचाई पर बैठ जाइये आप हमारे देवता हैं। हमारे बराबर न खड़े हों आपकी मेहरबानी होगी। “ उनकी बात सुनकर गुरुदेव ने इधर उधर देखा और फिर इनकी ही भाषा में बोले ,” इधर तो कोई जगह नहीं है आप नीचे बैठ जाइये मैं खड़े होकर ही बात कर लूँगा।” उनको यह बात भी रास न आई कि गुरुदेव खड़े रहें और हम बैठे रहें। वह गुरुदेव में अपने कबीले के आराध्य को देख रहे थे। तब एक आदिवासी जो शायद कबीले का मुखिया था आगे आया और उसने आगे आ कर कहा:” मैं आपसे विनती करता हूँ आप किसी तरह हम से ऊपर खड़े हों। उसने सूर्य की तरफ संकेत कर के कहा उधर

भी तो आप ही खड़े हैं।" आदिवासीयों की बातों से लग रहा था शायद सूर्य उस कबीले का लोक देवता हो। गुरुदेव ने उस मुखिया की बात रखते हुए पास खड़ी गाड़ियों की छत पर बैठ कर उन कबीलाई लोगों को सम्बोधित किया। उस सम्बोधन में गुरुदेव ने उनके आराध्य सूर्य के और उसकी आराधना के रहस्य समझाये। सम्बोधन का समापन गायत्री मन्त्र के उच्चारण से हुआ। सबसे हैरान करने वाली बात थी कि गायत्री मन्त्र का उच्चारण बिल्कुल स्पष्ट था और करीब 40 मिनट के बाद ऐसा लगता था कि सारा वातावरण गायत्रीमय हो गया और ऐसा प्रतीत हो रहा था कि हर वृक्ष,वृक्ष का हर पत्ता गायत्री का गान कर रहा हो।

गुरुदेव इन देशों में 40 दिन रहे और 14 स्थानों पर गए। परिजन इन यात्राओं को याद करते हुए इस कबालियों का उद्बोधन और उनमे सोए हुए संस्कार का जागरण सबसे महत्वपूर्ण- दिखाई देने वाली – घटना समझते हैं। दिखाई देने वाली इस लिए कि अदृश्य जगत में तो कई घटनाएं हुई जिनका दृश्य संसार में कोई रिकार्ड नहीं रखा गया।

एक ही समय पर अनेकों स्थानों पर प्रकट हुए गुरुदेव

ॐ GAYATRI TEMPLE ॐ

GOLDEN
1969
JUBILEE
2019
ॐ भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य
धीमहि धियो योन: प्रचोदयात्
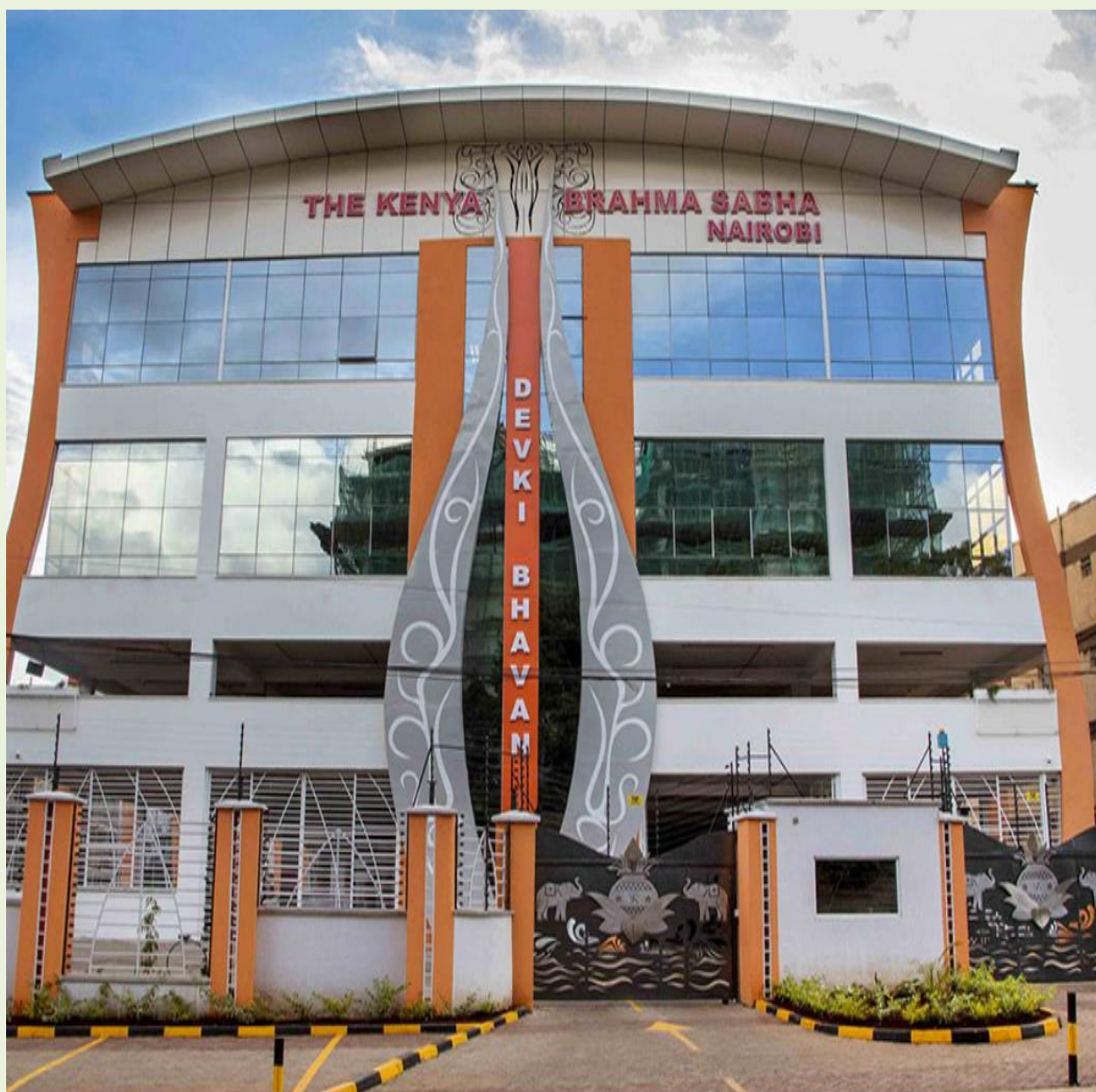
OPENING CEREMONY
OF
GAYATRI DWAR
PERFORMED BY
SATYAMITRANAND GIRIJI
MAHARAJ
ON 21ST AUGUST 2013
RAKSHA-BANDHAN DAY

ALL WORLD
GAYATRI PARIWAR
SHANTIKUNJ, HARIDWAR - INDIA
MOMBASA -

GAYATRI

A glimpse of the noble life mission of Revered Maharishi Shri Ram Sharma Acharya

When the Society as a whole, finds itself in the deepest depths of degradation, wnen the strangle-hold of vices, lust and, corruption makes existence a hellish experience, when the hydra headed Evil runs rampant, the gloom of despair is rent asunder by the advent of a Messiah sent by God. He fills the sunken hearts of humanity with hope and cheer, and by precept and example, works the miracle of rejuvenating the society.
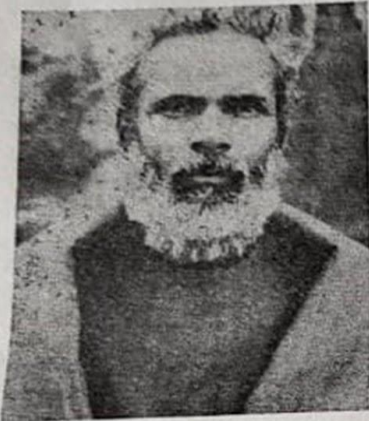
Our Indian Society is experiencing a similar unhappy lot. The depths of degradation to which the society has fallen have made us oblivious of all sense of true volues. The lure of cheap materialistic western ways has us in its vicious grips. In consequence, Instead of seeking the sublime the society has fallen into the blind rat race for cheap, fleeting, loud and ludicrous goals blindly believing them as true. Fortunately for us even in these darkest hours, we have amongst us a Messiah eager to guide the lost souls to the right path. The Messiah who for the last two score years and more, has been serving as beacon light to guide the lost souls to the path of temporal well being and spiritual sublimation, is none else than Maharshi Acharya Shri Ram Sharma, some glimpses of whose life and monument work will help all to come to a proper understanding of his noble works.

Acharyaji's early life and mission.

Born in an affluent family, of a devout and learned father, at a village in U.P., Acharya Shri Ram Sharma even in his childhood, showed signs of being made of a stuff far different from the common clay. He had the good fortune to be invested with the sacred thread by late Pandit Madan Mohan Malviya. At the age of 15 at the call of his Inner Voice to go in for penance, he left home. This attempt to be an ascetic was, however, foiled by the relatives. At the age of 16 however, his Guru of five previous births gave him Gayatri Mantra Initiation which eventually to his embarking upon his noble mission.

Following the Guru's command, he went through a firey ordeal of penance for 24 years, and become a master Sadhak. Thus equipped he determine to serve the society through his mission aiming at the temporal well being and spiritual sublimation of his fellow beings.

Freedom Fighter.

When Gandhiji started the freedom struggle Sharmaji as a true soldier of the nation plunged himself into the fight, served terms of imprisonment and stayed at Gandhiji's ashram, thus getting himself thoroughly acquainted with Gandhiji's philosophy and way of life. Though many of his comrades of Freedom Struggle days managed to reach power and position later on, Panditji chose for himself the anonymity of a dutiful soldier.

His Noble Mission.

With a view to putting his cherished ideals of ennobling the individual lives, and thereby bringing back to the society the glory of our long forgotten cultural heritage, Sharmaji started his multifarious activities. His unswerving faith in Gayatri as the panacea for all our evils made him establish, the Gayatri Pariwar, which has flourished now into handreds of branches at different centres. Here Panditji's noble work is carried on in a spirit of devoted services.

His monumental literary output.

To spread, the message of his mission, and to make people alive to the need of being actively conscious of our great cultural heritage Sharmaji launched his famous magazine Akhand Jyoti whose subscribers run into lakhs. The magazine serves as a mouth piece of his mission of ushering in a new era of cultural revival. The Yug Nirman Yojna another mag-azine of his, started seven years ago is rendering signal service to his cause.

Besides these, Sharmaji's literary contribution to the promotion and popularisation of our Vedic, Upanishadic and Pauranic literature is stupendous. At present he is engaged in bringing out Shree Geeta Vishwakosha, a volume of 1800 pages. His Gayatri Upasana in three volumes is a monumental work. To add to these, he has brought out hundreds of booklets on various topics all aiming at the revival of our glorious culture and ushering in a New Era of awakening and renewed strength. His profound knowledge of Vedic and Pauranic lore, and his brilliant power of lucid exposition has endeared Sharmaji to all as a true guide, philosopher and friend. Many of his devout followers rank him with Shri Ram Krishna Paramhansa, Raman Maharshi or Swami Dayanand.

Gayatri Tapobhoomi.

With a view to giving a concrete shape to his ideals Panditji founded the Gayatri Tapobhoomi at Mathura. Here his cherished ideals find a visible embodiment in the multi-*farious projects* undertaken here. There is a splendid and spacious Gayatri temple, treasuring waters of all holy places, ancient scripts of Gayatri, where Gayatri Upasana is carried on. Added to this are industrial and medical units. Since Panditji lays the greatest stress on the importance and efficacy of Sacrifice (Yagna) for the performance of which there is a Yagna Shala also.

Another noteworthy feature of the Tapobhoomi is the Yuga Nirman Vidyalaya a multi-purpose institution run as a part of the Tapobhoomi activities. providing a living example of Swamiji's practical approach to fulfilling his ideals of a true education which instead of bringing out misfit students helps them in being self-dependent cultured members of the society being well equipped to play their part usefully in the service of the Society. The pupils here get a good grounding in various arts, crafts and trades along with a rich cultural training.

Propagation of his mission.

As a torch bearer, blazing the Trail of ushering in the New Era of cultural revival, Acharyaji arranges discourses, discussions, seminars and conventions at different centres with his able guidance and help this mission of glorious reswakening is ably carried on.

Acharyaji is a sworn enemy of bigotry, dogma, sham, cant, and blind faith and blind beliefs. His approach at all problems is scientific and psycho-philosophic. The work of clearing off the cobwebs of foolish dogmas and blind beliefs is ably carried on by his scientific Gayatri Research Centres.

Acharya Shri Ram Sharma cherishes the aim of ennobling and enriching the lives of the individuals through his creed of faith, prayer, constant Sadhana and selfless service to the Society. He firmly believes that if individual lives are redeemed and ennobled the redemption of the society to its resplendant glory will be a natural concomittant.

Programme

In connection with
Mahershi Shri Ram Sharma Achary's visit to Kenya

I. AT NAIROBI **Date**

(a) 15th, 16, and 17th December, 1972 at SHREE SANATAN DHARAM SABHA, Temple, Duke Street. Under the auspices of S. S. D. Sabha, Nairobi.

5 KUNDI GAYATRI MAHA YAJNA.
Time for 15th December, 1972 (Friday) and December, 16th '72 (saturday) ·

5.30 p.m. to 6.30 p.m, YAJNA (HAVAN)
6.30 p.m. to 7.00 p.m, Kirtan Bhajans etc:
7.00 p.m. to 8.00 p.m: Updesha by Maharishi Sri Ram Sharma Acharya

8.15 p.m. Aaarti.

Time for 17th December, 1972 (sunday) at S.S.D. Sabha Temple Duke Street, Nairobi.

8.30 a.m. to 9.30 a.m Personal contacts with visitors.
10.00 a.m. to 11.00 a.m Yagna (Havan)
11.30 a.m. to 12.30 p.m Speech by Maharshi Sri Ram Sharma Acharya.

(b) At Cutchi Gujrat Hindu Union Hall, Duke Street Nairobi. Under the auspices of Cutchi Gujrat Hindu Union 17th Dec. '72 (Sunday).

5.00 p.m. to 5.30 p.m Bhajan Kirtan etc.
5.30 p.m. to 6.30 p.m Speech by Maharshi Sri Ram.
6.30 p.m. to 7.00 p.m Answering questions

(c) At Kenya Brahm Samaj, Forthall Road, Nairobi. Under the auspices of Kenya Brahm Samaj Nairobi, On 18th, and 19th December, 1972.

5.30 p.m. to 6.00 p.m Bhajan, Kirtan etc.
6.00 p.m. to 7.00 p.m Speech by Maharshi Sri Ram Sharma Acharya.
7.00 p.m. to 7.30 p.m Answering of questions.

(d) At Deen Dayal Bhavan, Desai Road, Nairobi. Under the auspices of B.S.S. Sangh, Nairobi on 27th, 28th, and 29th, December, 1972.

5.30 p.m to 6.00 p.m Hoisting of Bhagwa Djawaj and prayers etc.

6.00 p.m to 7.00 p.m Speech by Maharshi.

7.00 p.m to 7.30 p.m Answering questions.

(e) At Lohana Mahajan Mandal, Desai Road Nairobi. Under the auspices of Cutchi Gujrati Hindu Union Nairobi.

TWENTY FIVE KUNDI GAYATRI MAHA YAJNA FOR PEACE IN THE WORLD On 30th and 31stDecember, 1972 and 1st January, 1973. Detailed programme to follow.

II. AT MOMBASA

Under the auspices of Shree Mombasa Brahma Samaj, Saramala Street Mombasa.

One hundred and eight Kund GAYATRI Maha Yajna for world peace and prosperity of Kenya will be held on 23rd, 24th, and 25th December, 1972. This will be witnessed by Mahershi Sri Ram Sharma Acharya. Detailed programme to follow.

III. AT KISUMU

Under the auspices of Shree Sanatan Hindu Union KISUMU.

TWENTY FIVE KUND GAYATRI MAHA YAJNA will be held at Shree Laxmi Narayan Temple Kisumu on 5th, 6th, and 7th January, 1973. Detailed programme to follow.

Please Note:—

(1) The names for home reception, Mantra Diksha, Questions and for other programmes contact or write before 25th December, 1972 to :—

RAM TAK
C/o TARMAC (E.A.) LTD.
MARKET BRANCH BUILDING OF
BARCLAYS BANK
P. O. BOX 72879,
TEL. 26064
N A I R O B I.

कुछ विशेष जानकारी :

गुरुदेव की अफ्रीका यात्रा के उद्देश्य के बारे में हमने आरम्भ में लिखा था,उन्ही पंक्तियों को एक बार फिर से दोहरा रहे हैं :

"चेतना की शिखर यात्रा" में ऐसा वर्णन भी मिलता है कि गुरुदेव ने अफ्रीका यात्रा में 14 स्थानों में से अमृतमंथन कर 14 रत्न निकाले जिन्होंने गायत्री परिवार को न सिर्फ अफ्रीका बल्कि UK,USA ,CANADA आदि देशों में ले जाने का काम किया ।

राम टाक जी के छोटे भाई पूर्ण टाक जी ने 28 अप्रैल 2020 को whatsapp मैसेज में हमें बताया था : ” मुझे आज भी याद है – गुरुदेव का अफ्रीका प्रवास public speeches देने का नहीं था बल्कि कुछ ऐसी आत्माओं के साथ सम्पर्क स्थापित करना था जो अफ्रीका में ही नहीं Canada , USA , UK और दूसरे देशों में भी गायत्री परिवार को लेकर जाएँ “

हमने इस बात को टेस्ट करने के लिए कि गुरुदेव के निर्देश का कितना पालन हुआ है, कुछ ऑनलाइन रिसर्च की। इस रिसर्च के अनुसार वर्तमान में अफ्रीका में तो गायत्री परिवार का व्यापक प्रसार हो चुका है। केन्या की राजधानी नैरोबी में एक Full- Fledged Kenya

Brahma Samaj के नाम से भवन बन चुका है जिसमें बहुत ही उच्कोटि का कार्य सम्पन्न हो रहा है।

शशिकांत रावल जी जिनका जब भी अफ्रीका की बात आएगी, इस समाज के मेंबर हैं। अपने पाठकों को स्मरण करा दें कि यह शशिकांत जी वही हैं जिन्हें गुरुदेव ने गायत्री माँ का स्वर्ण यंत्र भेंट किया था। मोम्बासा में गायत्री मंदिर की स्थापना की भी जानकारी मिलती है, अभी कुछ वर्ष पूर्व ही आदरणीय चिन्मय पंड्या जी इस मंदिर में परिजनों को उद्बोधन दे चुके हैं।

इस मंदिर के द्वार "गायत्री द्वार" का उद्घाटन भारतमाता मंदिर के आदरणीय स्वर्गीय सत्यमित्रानंद गिरिजी जी के कर कमलों से हुआ था।

इसी प्रकार UK में All world Gayatri Pariwar UK के नाम से 9 स्थानों पर गायत्री परिवार सक्रीय हैं। इन सभी शाखाओं की जानकारी इस लिंक से मिल सकती है। यह सभी केंद्र ईस्ट अफ्रीका से बाहिर गए कार्यकर्ताओं द्वारा, गुरुदेव के आह्वान पर, गुरुदेव की यात्रा के बाद ही स्थापित हो पाए हैं।

जानकारी इतनी अधिक, विशाल और विस्तृत है कि सभी का विवरण असंभव तो नहीं है लेकिन कठिन अवश्य है। हरिद्वार स्थित शांतिकुंज से संपर्क करके बहुत सी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। हमारे पास भी कुछ जानकारी है, पाठक हमसे भी सम्पर्क कर सकते हैं

तो आइये गुरुदेव की अफ्रीका यात्रा को आगे बढ़ाएं

केन्या की राजधानी नैरोबी में गुरुदेव विद्या परिहार के निवास पर रुके। जोधपुर से वर्षों पहले नैरोबी जा कर बसे इस परिवार ने उस ज़माने में प्रवासी भारतीयों और मूल अफ्रीकी लोगों को गायत्री मंत्र, उपासना और गुरुदेव के मिशन के बारे में काफी कुछ बताया, प्रशिक्षित किया था। गायत्री तपोभूमि की स्थापना और उससे भी पहले गायत्री परिवार से जुड़े इस परिवार की आस्था थी कि गुरुदेव के आशीर्वाद उनके जीवन में फलीभूत हुए है। विद्या तब दस बारह साल की रही होंगी। भाई राम टांक चतुर एवं व्यावसायिक बुद्धि के थे।

परिवार के अन्य सदस्यों ने 1956 के सहस्रकुंडीय महायज्ञ में सक्रिय हिस्सा लिया था। केन्या के परिजनों

का मानना था कि इसी परिवार ने गुरुदेव से नैरोबी आने और यहां के परिजनों को दिशा दर्शन देने का अनुरोध किया था। गुरुदेव जितने भी समय नैरोबी रहे, वहां के परिजनों में प्रत्यक्ष रूप से आने वाले बदलावों के बारे में बताते रहे। उस समय के अधिकांश परिजन अब पूर्वी अफ्रीका से निकल कर दूसरे देशों में बस चुके हैं।

1973 में गुरुदेव की यात्रा के बारे में अब भी लोगों को कई बातें याद हैं। विद्या परिहार के घर में तब Poly नाम का एक तोता हुआ करता था। घर में कोई भी आता तो वह गायत्री मंत्र बोल कर उसका स्वागत करता। गुरुदेव ने उस परिवार में कदम रखा तो तोते ने उनका भी गायत्री मंत्र बोल कर स्वागत किया। गुरुदेव ने उस तोते की ओर स्नेह से देखा। किसी ने उस समय

कहा, 'मंडन मिश्र के घर पर भी वहां के तोते वेदमंत्रों का उच्चारण करते थे ।'

गुरुदेव ने कहा कि इस तोते के पाठ से परिवार में गायत्री के वातावरण का पता चलता है लेकिन तोते की तरह पाठ करने से साधक को कोई लाभ नहीं होता, उसके लिए तो उपयोगी यही है कि गायत्री उपासना के साथ साधना भी करें। उपासना बीज है तो साधना कृषि कर्म । बिना कृषि कर्म के खेत की तैयारी जुताई, बुआई और निराई के बीज का कोई महत्व नहीं है।

विद्या परिहार के निवास पर गुरुदेव की उपस्थिति में 3-4 बार नैरोबी के परिजनों का जमावड़ा लग जाता। मनुष्य, धर्म, समाज, संस्कृति और घर परिवार के साथ देश काल की चर्चाएं भी होती। दो गोष्ठियां संपन्न होने

के बाद स्थानीय परिजन रोज़ चक्कर लगा जाते। गुरुदेव बाहरी कार्यक्रमों के बाद जो समय बचता उसे पूर्वी अफ्रीका और आसपास के देशों में निवास कर रहे परिजनों से संपर्क में भी लगाते। उनकी प्रेरणा होती थी कि अपने धर्म और संस्कृति की सेवा करते हुए जिस देश में निवास कर रहे हैं, वहां के राष्ट्रीय हितों की चिंता करना आप सबका प्रथम कर्तव्य है ।

मोशी में गुरुदेव ने तीन दिन एकांत साधना की

मोंबासा के रास्ते मोशी कस्बे में गुरुदेव कुछ समय रुके। अदृष्ट घटनाओं में एक का उल्लेख यहाँ के बारे में मिलता है। गुरुदेव के साथ गए कार्यकर्त्ता आत्मयोगी बताया करते थे कि हम लोग तीन दिन मोशी में रहे। वहां गुरुदेव ने परिजनों से मिलने जुलने का सिलसिला

ही शुरू नहीं किया। अधिकतर समय वे एक कमरे में बंद रहे। आत्मयोगी और मेज़बान परिवार के लोगों से कह दिया गया कि चौबीस घंटे तक उनके कक्ष की ओर नहीं आया जाए। आहार, जल और जरूरी
चीज़ें पहुंचाने की फिक्र भी न की जाए। गुरुदेव के निर्देशों का पूरी तत्परता से ध्यान रखा गया। परिवार का कोई बच्चा गलती से भी उधर न चला जाए अथवा वहां आते रहने वाले मित्र-परिचित भूल से भी दरवाजा न खटखटा दें, इसके लिए सावधान रहते हुए आत्मयोगी ने गुरुदेव के कक्ष के सामने ही डेरा जमा लिया था। परिवार के सभी लोग निश्चिंत होकर अपनी दिनचर्या के निर्धारित काम करते रहे। उन्होंने मान लिया कि गुरुदेव जैसे यहां आए ही नहीं हैं।

इस एकांत सेवन के दौरान किलिमंजारो, तिक और मरसाबित कस्बों में विचित्र घटनाएं हुईं। तीनों कस्बे केन्या में हैं और परस्पर 150 से 200 किलोमीटर दूर हैं। मोशी समेत चारों कस्बों की दूरी का हिसाब लगाएं तो 800-1000 किलोमीटर की दूरी बनती है।

किलिमंजारो पर्वत भी है और हिल स्टेशन भी।

समुद्रतल से करीब 6000 फीट ऊँचाई पर स्थित इस कस्बे में एक परिजन रहते थे विक्रम देसाई। दो वर्ष पूर्व भारत जाना हुआ था तब मथुरा भी गए। उन दिनों गुरुदेव के मथुरा छोड़कर हिमालय क्षेत्र में जाने की तैयारियां चल रही थीं।

विक्रम भाई का उन्हीं दिनों विवाह हुआ था और विदाई वर्ष में ही वे पत्नी सहित चार दिन के परामर्श शिविर में

भी हो आए थे। मथुरा में गुरुदेव के सान्निध्य में पति पत्नी इतने अभिभूत हुए कि उन्होंने अपनी भावी संतान का नामकरण गुरुदेव से ही कराने का संकल्प कर लिया। जून 1971 में हिमालय जाने के बाद गुरुदेव का क्या कार्यक्रम रहेगा, वे वापस आएंगे भी या नहीं अथवा आएंगे तो लोगों से मिलना जुलना हो सकेगा या नहीं, यह किसी को पता नहीं था। स्वयं गुरुदेव को भी नहीं। उनसे कोई पूछता तो अपने गुरुदेव और परिजनों के दादागुरु द्वारा मिले निर्देशों के अनुसार वे उत्तर दे देते। जो उत्तर देते उसके अनुसार भविष्य में किसी से भी प्रत्यक्ष संपर्क होना मुमकिन नहीं था। मिल पाएंगे या नहीं , इस बारे में गुरुदेव स्वयं भी निश्चिंत नहीं थे। मथुरा के परामर्श सत्र में विक्रम भाई को पता चला तो

उन्हें निराशा हुई कि उनकी कामना पूरी न हो सकेगी। वे मन मसोस कर रह गए।

अब 1972 में गुरुदेव के अफ्रीकी देशों की यात्रा का कार्यक्रम बना तो विक्रम भाई को अपनी मुराद पूरी होती दिखाई दी। लेकिन वह भी जल्दी ही क्षीण हो गई क्योंकि गुरुदेव को मोंबासा नहीं उतरने दिया गया था। रास्ते में हुई देरी के कारण कुछ कार्यक्रम स्थगित करना पड़े थे। इन कार्यक्रमों में ही एक जगह विक्रम भाई ने गुरुदेव से मिलने की योजना बनाई थी। अब गुरुदेव उस जगह पहुंच ही नहीं रहे थे तो विक्रम भाई का निराश होना स्वाभाविक था । लेकिन जिस दिन की यह घटना है उस दिन शायद कोई रविवार था। इस दिन की पिछली शाम से विक्रम भाई और उनकी पत्नी रत्ना

देसाई के मन में हर्ष हिलोरें फूट रही थीं। कोई कारण समझ नहीं आ रहा था फिर भी मन था कि बावरा हुआ जा रहा था जैसे घर में कोई प्रिय परिजन अत्यंत निकटवर्ती सदस्य आने वाला हो । रात इसी हर्ष उल्लास में ठीक से नींद नहीं आई। रत्ना ने दो बार उठकर पति को जगाया और कहा, ऐसा लगता है जैसे गुरुदेव हमारे यहाँ पधारे हैं और यहीं ठहरे हैं। विक्रम को भी कुछ अचीन्ही संभावना तो महसूस हो रही थी लेकिन यह विचार जम नही रहा था कि गुरुदेव आने वाले हैं। कोई सूचना नहीं थी और घर आने के बारे में सपने में भी नहीं सोचा जा सकता था । रत्ना से कह दिया कि चुपचाप सो जाओ। किसी और से मत कह देना यह बात । हंसी होगी। रत्ना ने दूसरी बार फिर यही

बात दोहराई तो विक्रम ने खीझ कर चुप रहने और सो जाने के लिए कहा ।

उस समय तो बात आई गई हो गई लेकिन अगले दिन रविवार को पति पत्नी दोनों स्नान संध्या से निपट कर हवन करने बैठे। विक्रम और रत्ना दोनों ब्रह्म संध्या तथा गायत्री जप तो अलग-अलग करते थे लेकिन रविवार के दिन गायत्री यज्ञ एक साथ किया करते थे। उस दिन पड़ौस से विश्वरंजन भाई का परिवार भी आ जाता था। चार पांच लोग हो जाते और 40 -50 मिनट का यह आयोजन आत्मीयता और दिव्य भावों के मिले जुले माहौल में हो जाता। उस दिन इन 5-6 व्यक्तियों के साथ एक वयोवृद्ध सज्जन भी उपस्थित हुए। धोती कुर्ता और जाकिट पहने इन सज्जन के सिर पर श्वेत केश राशि

थी। वे कब घर के भीतर आए किसी को पता नहीं चला, रत्ना और विक्रम को प्रतिपल लगता रहा कि उन्होंने द्वार पर आहट सुनी थी और दोनों ने दरवाजे खोल दिए। आते ही उन सज्जन ने यज्ञ में समिल्लित होने की इच्छा जताई जिसे देसाई दंपत्ति ने तुरंत मान लिया फिर ऐसा कुछ वातावरण बना कि उस दिन के यज्ञ आयोजन का पौरोहित्य ही उन “अपरिचित आगन्तुक” के हाथों होने लगा। यज्ञ पूर्णाहुति से पहले उन सज्जन ने कहा

“अब अपने बच्चे को लाइए। उसका नामकरण करेंगे।”

ऐसा सुनना था कि देसाई दंपत्ति की तंद्रा टूटी। अभी तक वे जैसे किसी अज्ञात शक्ति के वशीभूत से ही यज्ञ हवन करा रहे थे । “नामकरण” की बात सुनकर उनकी

बेहोशी टूटी और वे चैतन्य हो उठे। सामने बैठे, यज्ञ संपन्न करा रहे व्यक्तित्व की ओर देखा, दोनों के मुंह से बरबस निकला “गुरुदेव आप”। इन दो शब्दों के अलावा उनके मुंह से तीसरा शब्द नहीं निकला। नज़रें बदली तो नज़ारा ही बदल गया। बच्चे का नामकरण गौण हो गया और गुरुदेव के अर्चन आराधन पर ही दोनों का ध्यान केन्द्रित हो गया । विश्वरंजन बाबू को कुछ समझ नहीं आ रहा था। विक्रम भाई ने कहा, “अरे ये हमारे गुरुदेव हैं। हम और आप पर कृपा करते हुए यहां प्रकट हुए हैं।” विश्वरंजन को ध्यान आया कि कभी यज्ञ और पूजा पाठ के समय जब कभी वे यहां आते रहे हैं और जो

चित्र दिखाई देता,उसमें और उपस्थित महात्मा में रत्ती भर अंतर नहीं है। उन्होंने भी उठकर प्रणाम किया। बाद

में विश्वरंजन बाबू ने हैरानी भी जताई कि फोटो में छवि देखते रहने के बावजूद वे गुरुदेव को पहचान नहीं सके। विक्रम भाई ने भी आश्चर्य जताया।

एक अचंभा और भी हुआ। देसाई दंपत्ति और विश्वरंजन ने मिलकर पूर्णाहुति की और समापन होने लगा तो एक-एक, दो-दो कर 15-20 लोग और वहां आ गए। ये सब पास पड़ौस से ही थे । घर पर यज्ञ आयोजन कई बार हुए हैं लेकिन आने वालों की संख्या तीन चार लोगों से अधिक नहीं रही। इस बार तीन चार गुना लोग आए। उन्हें गायत्री और यज्ञ के सम्बन्ध में गुरुदेव का उद्बोधन भी सुनने को मिला।

"प्रवासी संस्कृति का संकट और समाधान" सेमीनार में गुरुदेव की अद्भुत उपस्थिति

रविवार को किलिमंजारो में एक परिवार में यह छोटा सा उत्सव हो रहा था, ठीक उसी समय 10:30 बजे मरसाबित कस्बे के एक सभागार में 150-200 लोग किसी सेमीनार में जुटे हुए थे। अधिकतर लोग उस क्षेत्र के प्रसिद्ध लेखक, साहित्य और विज्ञान से सम्बंधित थे। इनमें विज्ञान और दर्शन शास्त्र पढ़ रहे विद्यार्थी भी थे। मरसाबित केन्या के पूर्वी हिस्से में बसा शहर है। अब तो यह नामी ज़िला बन गया है और उस क्षेत्र के उद्योग व्यापार का केन्द्र भी है। केन्द्र तब भी था लेकिन यहां के प्राकृतिक सौंदर्य के लिए जाना जाता था । पर्यटकों की संख्या तब भी यहाँ खूब थी। धर्म परंपरा अनुसार यहां ईसाइयों की संख्या अधिक है। लगभग 40 प्रतिशत। उसके बाद इस्लाम में यकीन रखने वालों की बारी आती

है, करीब 32 प्रतिशत, 28 प्रतिशत लोग स्थानीय आदिवासी परंपराओं और पूजा विधियों को मानते हैं । कस्बा एक सुप्त (सोये हुए) ज्वालामुखी पर बसा हुआ है। धर्मगुरु लोगों को उपदेश देते डराते रहे हैं कि इस शहर की पहाड़ी से किसी भी वक्त गरम-गरम लावा और आग के गोले फूट पड़ सकते हैं। ईश्वर के कोप के कारण ऐसा होगा और उससे बचने के लिए तुम्हे हमारे धर्म की शरण में आना चाहिए। किसी ज़माने में इलाके की पूरी आबादी स्थानीय देवी देवताओं और रीति रिवाजों को मानती थी। बाद में पहुंचे धर्म प्रचारकों ने उनमें से कई को अपने मत में दीक्षित किया। शिक्षा का प्रचार हुआ तो भी कई लोग

आदिवासी और स्थानीय विश्वास छोड़कर संगठित व्यवस्थित धर्मों को अपनाने लगे।

जिस आयोजन का संदर्भ ऊपर की पंक्तियों में आया है, वह इलाके में बदल रहे धर्म विश्वासों के अनुपात और उसके प्रभाव पर ही था। चर्चा का विषय था 'प्रवासी संस्कृति का संकट और समाधान'। आयोजकों ने इस कार्यक्रम में गुरुदेव को भी आमंत्रित किया था। गुरुदेव की अफ्रीका यात्रा के बहुत से महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में एक यह भी था। जिन कारणों से मोम्बासा पहुंचने और पहले से निर्धारित कार्यक्रमों में फेरबदल करना पड़ा, उसमें मरसाबित भी एक था। मरसाबित की कुछ संस्थाओं ने तो गुरुदेव के न आने पर दुष्प्रचार भी शुरु कर दिया। उनका कहना था कि मोम्बासा न उतरने देने

का कारण तो एक बहाना ही है। गुरुदेव खुद इस कार्यक्रम में नहीं आना चाहते थे क्योंकि उनके पास अपने मत और विश्वास के बचाव में कोई दलील हैं ही नहीं। इस प्रचार के लिए 10-12 दिन का समय मिल गया था। जिस दिन यह कार्यक्रम होना था उस दिन गुरुदेव करीब 700 किलोमीटर दूर मोशी में थे और वहां से इतनी जल्दी मरसाबित पहुँचने का कोई साधन ही नहीं था रविवार ही किलिमंजारो में विक्रम देसाई परिवार में यज्ञ हो रहा था और रविवार को ही मरसाबित के सेंट्रल आडिटोरियम में विज्ञान और साहित्य के अध्यापकों, विद्वानों के साथ यह सेमिनार हो रहा था। संयोजक संचालक प्रो. इसरार ने कहना शुरु किया: मित्रों, सभा की कारवाई शुरु की जाए। दो तीन

को छोड़कर सभी विद्वान आ गए है। कुछ आ नही सके और कुछ ने न आने के लिए बहाना तलाश लिया (शायद वह गुरुदेव के बारे में ही कह रहे थे)। जब प्रो. इसरार ऐसा कह ही रहे थे कि सभागार द्वार पर कुछ चहल-पहल दिखाई दी। कोई विद्वान अतिथि आते प्रतीत हो रहे थे। उनके साथ चल रहे साथी सहयोगी कुछ वचनों और उद्घोषों का उच्चारण करते चल रहे थे। लोगों का वह समूह जब मंच के पास आ गया तो प्रो. इसरार ने आगंतुक विद्वान को पहचाना और कहा मित्रों हमें गलत सूचना मिली थी । आचार्य श्री हम लोगों के बीच आ चुके हैं। उस गोष्ठी में प्रवासी लोगों के कारण स्थानीय संस्कृति और रिवाजों पर आ रहे संकटों के बारे में चर्चा होनी थी। शुरू में दो वक्ताओं ने इस विषय पर

अपनी बात रखी लेकिन तीसरे और चौथे क्रम में ईसाई, इस्लाम, सिख तथा जैन धर्म के विद्वान अपने अपने मतों का पुरजोर समर्थन करते हुए उन्हें ही स्थापित करने पर जोर देने लगे। स्थिति अपने मत की पुष्टि के साथ दूसरों के मत का खंडन और फिर निंदा की दिशा में बढ़ने लगी। गुरुदेव को नौवें क्रम पर बोलना था । उन्होंने अपना परिचय एक ऐसी धारा और परंपरा का अनुयायी “विद्यार्थी” होने के रूप में दिया जिसकी सैंकड़ों शाखाएं हैं और उनमें कोई भी व्यक्ति या समूह अपने लिए एक उपयुक्त शाखा चुन सकता है। चुनने का अर्थ उस धर्म परंपरा में दीक्षित होना नहीं, बल्कि अपने विश्वासों को उसके प्रकाश में समझना है।

गुरुदेव ने सूर्य विज्ञान के प्रयोग किये

गुरुदेव ने इस गोष्ठी में सूर्य विज्ञान के कुछ प्रयोग बताए । उन प्रयोगों के आधार पर फूल खिलाए जा सकते हैं, संपदा प्रकट की जा सकती है और शून्य में से मनचाही वस्तुएं प्रकट की जा सकती हैं। उन्होंने दो तीन प्रयोग करके भी दिखाए। एक प्रयोग में प्रो. इसरार की चुनी हुई कुर्सी का पाया लकड़ी से लोहे में बदलकर दिखाया। चारों तरफ से बंद सभागार में तेज धूप को अपने इशारों से उतारकर दिखाया जैसे सूर्य की किरणों ने छत और दीवार की बाधाएं पार कर ली हों ।

सभागार में ही बैठे एक लकवाग्रस्त व्यक्ति को उन्होंने अपनी जगह से बिना सहारे उठाकर खड़ा कर दिया और कुछ कदम चलाया भी। इन प्रदर्शनों के बाद कहा कि ये प्रयोग प्रतीकात्मक हैं, यों न समझें कि

मेस्मेरिस्म के कारण ये दृश्य दिखाई दिए। सविता देवता की, सूर्य नारायण की शक्ति का भलीभांति उपयोग किया जा सके तो आज की दुनिया में हम जितनी सफलताएं और उपलधियां हासिल कर इतराते हैं, उन सबसे हजार गुना चमत्कार किए जा सकते हैं।

गुरुदेव के कुछ प्रयोग प्रदर्शन और प्रतिपादन के बाद आयोजन वहीं पूरा हो गया। उनके बाद तीन वक्ताओं को और बोलना था। उन्होंने अपने नाम वापस ले लिए और गुरुदेव से सविता विज्ञान पढ़ने की मंशा व्यक्त की। सभा संपन्न हुई। आयोजक और गोष्ठी में उपस्थित कुछ लोग गुरुदेव को बाहर छोड़ने गए। सभागार की सीढ़ियां उतरते तक तो लोगों ने उन्हें देखा। इसके बाद

गुरुदेव किस वाहन पर बैठे, किस दिशा में गए, किसी को पता नहीं चला।

ये घटनाएं पूर्वी अफ्रीका यात्रा की कुछ बानगियां (Hallmarks) हैं। उस यात्रा के जितने विवरण मिलते हैं, उन्हें ध्यान में रखें तो एक ही समय अलग-अलग जगह अपने प्रेमियों और श्रद्धालुओं से संपर्क की सैंकड़ों घटनाएं हैं।

समापन